





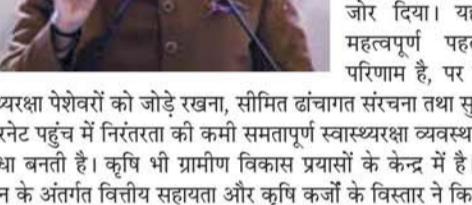






## संपादकीय ग्रामीण भारत महोत्सव मोटी का संबोधन

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ग्रामीण भारत महोत्सव में कहा कि ग्रामीण समृद्धिराष्ट्रीय प्रगति के लिए आवश्यक है। नई दिल्ली में आयोजित ग्रामीण भारत महोत्सव, 2025 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने प्रेरणादायक भाषण देते हुए ग्रामीण विकास का परिवर्तनकारी महत्व उजागर किया। इस आयोजन में 'विकसित भारत 2047 हेतु समृद्ध ग्रामीण भारत का निर्माण' थीम के अंतर्गत ग्रामीण भारत की दृढ़ता और समृद्धि को रेखांकित किया गया। यह भारत को उसकी स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष में विकसित राष्ट्र बनाने पर लक्षित है प्रधानमंत्री मोदी ने जोर दिया कि सरकार के इरादे, नीतियां तथा निर्णय ग्रामीण भारत में नई ऊर्जा भर रहे हैं। उन्होंने स्वास्थ्यरक्षा, कृषि, मूल ढांचागत संरचनाएं तथा गांवों में जीवन की गुणवत्ता में महत्वपूर्ण उपलब्धियां रेखांकित कीं जिन्होंने आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा दिया है। कांविड-19 वैश्विक महामारी पर भारत की प्रतिक्रिया बताते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय गांवों ने अंतिम व्यक्ति तक वैक्सीन की पहुंच सुनिश्चित कर दुनिया में व्याप संदेहों को खारिज कर दिया। उन्होंने इस सफलता का श्रेय समावेशी विकास नीतियों को दिया जो समाज के हर वर्ग की जरूरतें पूरी करती हैं। ग्रामीण भारत महोत्सव, 2025 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संबोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण उपलब्धियां उजागर करते हुए भविष्य में प्रगति की आशाजनक तस्वीर पेश की। इन उपलब्धियों के प्रशंसनीय होने के बावजूद गहन परीक्षण से कुछ चुनौतियां भी सामने आती हैं जिनको समग्र व टिकाऊ ग्रामीण परिवर्तन के लिए परिभाषित किया जाना चाहिए। प्रधानमंत्री मोदी ने 1.5 लाख से अधिक 'आयुष्मान आरोग्य मंडरों' की स्थापना तथा ग्रामीण क्षेत्रों में टेलीमेडिसिन के विस्तार पर स्वास्थ्यरक्षा उपलब्धियों के रूप में जोर दिया। यह प्रगति महत्वपूर्ण पहलों का परिणाम है, पर प्रशिक्षित



भारत में,  
शाकाहार को  
अपनाना विशेष  
रूप से व्यावहारिक  
है, क्योंकि यहाँ  
प्राकृतिक रूप से  
शाकाहारी खाद्य  
पदार्थों की एक  
विस्तृत शृंखला है।

**प्रशान्त विश्वनाथ**  
(लेखक, स्तंभकार हैं)

नए वर्ष में नए संकल्पों पर विचार करना स्वाभाविक है। जबकि हममें से कुछ लोग अपने संकल्पों पर कायम रह सकते हैं और कुछ ऐसे भी होंगे जो नहीं रह सकते। हालांकि, निराश होने की कोई वजह नहीं है। नए साल का संकल्प लेना अपने बारे में जागरूकता और बेहतर करने के लिए सचेत निर्णय का एक संयोजन है। यहाँ तक कि एक लक्ष्य निर्धारित करना भी सही दिशा में एक कदम है; यह ज्यादातर लोगों की तुलना में कहीं ज्यादा है।

शाकाहारी होना जिसे कभी एक बड़ी चिंता है जो बदलाव करना चाहिए तथ्य यह है कि शाकाहार केवल आहार बारे में नहीं है, यह एक ऐसी जीवनशैली है जो लोगों को किसी भी तरह के पशु शर्करों से दूर रखती है।

परिवर्तन संगठन जो जनवरी उसके बाद लोगों को शाकाहारी खाना लिए प्रोत्साहित करता है— एक सह समुदाय बनाने के महत्व को समझत भारत में संगठन के प्रमुख प्रशांत विश्व कहते हैं, हम जानते हैं कि सकारात्मक अदानें बनाने के लिए एक परिषिद्धि

शाकाहारी होना, जिन कानून दक्षिणामांतर जीवनशैली विकल्प के रूप में देखा जाता था, अब न केवल पश्चिम में बल्कि भारत में भी तेजी से बड़ा स्थान ले रहा है। रिपोर्ट बताती हैं कि शाकाहारी आहार से 75 जटिल बानों का लगभग एक और पारस्परियतका तंत्र की आवश्यकता होती है। इसलिए हाँ ब्रांड, रेस्टरां और खुदरा विक्रेताओं के साथ मिलकर काम करते हैं ताकि पौधे आधारित उत्पादों को अधिक सुलभ बनाया जा सके।

## अतिक्रमण की समस्या

पटना के राजेंद्र नगर टर्मिनल के पास में स्थित कंकड़बाग में रोड से सटे पुल (रेलवे क्रॉसिंग) को पार करने के लिए बनाया गया यात्री ओवर ब्रिज फूटपाथ पुल जो वहां से पीएमसीएच पटना, साइंस कॉलेज, दिनकर गोलंबर, मछुआ टोली एवं खजांची मार्केट को जोड़ने वाला पुल है। फिर पीएमसीएच, पटना साइंस कॉलेज एवं राजेंद्र नगर पुल से मुख्य सड़क को जोड़ने वाली कंकड़बाग में रोड अगम कुआं, हाजीपुर एवं पटना रेलवे स्टेशन (महावीर मंदिर) को जोड़ती है। स्कूल को पार करके हजारों की संख्या में लोग नौकरी, पैसा, चिकित्सा, पढाई लिखाई एवं अन्य दैनिक कार्यों के लिए जाते हैं। पल दुकान लगाने वाले का कब्जा है। पुल का सकरा रास्ता है और जैसे ही पुल से लोग जो नीचे उतरते हैं वैसे ही ई रिक्षा वाले पुल के एकदम सटाके गाड़ी लगते हैं। तनिक से भी निकलने का जगह नहीं होता है। यदि कोई यात्री बोलता है तो उसके लिए आए दिन बाहर से होती रहती है। यात्री के साथ भद्र व्यवहार, गाली गलौज मारपीट ई रिक्षा वाले लोग करते हैं। संध्या के समय इसका नजारा देखते ही बनता है जब कुछ ई रिक्षा चालक नशे में धूत होते हैं। यह लोग भाँग, चरस, शराब आदि का सेवन किए होते हैं। यदि कोई यात्री या कोई इन्हें रास्ते पर से गाड़ी हटाने के लिए कहता है तो ये लोग उसके साथ मारपीट करते हैं।

## यूनियन कार्बाइड का कचरा

-फूंक कर पिएं तो अच्छा। कोर्ट के कंठे कर्चरे के निष्पादन से जलवाया खतरे को सरकार से पूर्व पीथमपुर के 15 में हुए कर्चरे निस्तारण से तस्मय लोगों और जन विरोध के मद्देनजर अब सरकार के फूंक कर कदम बढ़ाना होंगे क्योंकि उड़ते हैं। कर्चरे का निस्तारण जितना जरूरी स्वास्थ्य की सुरक्षा, जिसमें कोताही नहीं मनुकूल रिपोर्ट मिलने तक निस्तारण हेतु जानते हैं कि रासायनिक कर्चरा मानव सकता है। इसके दुष्प्रभाव से लोग कमज़ोर होते हैं। इसलिए कर्चरे के निस्तारण के अच्छा हो कि वैज्ञानिकों की एक टीम यह जारा रहा है उसके कितने दुष्प्रभाव होंगे गैंस कांड ने अनिगत लोगों की जान ले भी व्यक्ति के स्वास्थ्य को प्रभावित न होशित करे।

-बीएल शर्मा अकिंचन, ऊजैन

## आप की बात

---

— 1 —

**बढ़ता शहरीकरण**

बढ़ता शहरीकरण समसामयिक चिंतन के प्रमुख विषयों में से एक है। गांव की ओर बढ़ते शहर, फैलता सड़कों का जाल, गगनचुंबी इमारत का जमघट, सिमटते खेत खलिहान, घटते जंगल इत्यादि वो समस्याएं हैं जिनकी ओर कोई गौर करना नहीं चाहता है। विकास का पैमाना शायद अब बदल चुका है जिन पर गांव, खेत-खलिहान अब खरे नहीं उतरते हैं। सड़क बढ़ाने के लिए पेड़ काटे जाते हैं लेकिन कम होती जाते हैं सांसें और लहलहाती फसलों के ऊपर बिछ जाती है डाबर की परत। पक्की सड़क पर विकास तो दिखाई देता है लेकिन बरसात का पानी अब प्यासी धरती को कम नसीब हो पाता है जिस कारणवश गिरता भजल स्तर स्वच्छ हवा से ज्यादा स्लो इंटरने लोगों के लिए ज्यादा कष्टदाय समस्या बन जाती है। विडम्बना कि ऐसे अनेक समस्याएं जो भवित्व में और अधिक विकराल रूप सकती हैं उनकी ओर जागरूकता बनिरंतर अभाव है। सवाल उठता कि इन समस्याओं के प्रेरणा जागरूकता कैसे उत्पन्न की जाए व्यक्तिगत स्तर से लेकर सामाजिक स्तर तक जागरूकता व विचार करने की आवश्यकता है। विकास व अंदाधुंध गति को निर्यातिरि कर सकने की दिशा में अग्रसर किया जाए प्राकृतिक संसाधनों से छेड़छाड़ा ना तथा प्रकृति व मानव के बीच एक संतुलन स्थापित करके ही कोई विकास कार्य किया जाए।

## सत्ता के लिए बंटती रेवड़ी

ट दिल्ली में आगामी चुनावी माहौल क है तो जी से राजनीतिक पारा चढ़ता य जा रहा है। सतारूढ़ आप और ले भाजपा के बीच की चुनावी मुकाबले का है नजर नहीं आ रही है। दिल्ली फतह करने में जुटे केजरीवाल रेवड़ी ? उहोंने पुजारी-ग्रंथी योजना का क एलान किया है जो राजनीतिक विवादों में घिरती नजर आ रही है। ने इसे अवसरवादी कदम कर्त्ता तिंबांग साप्तर्णि तो पाप भेसा आने के बाद इनके क्रियान्वयन को लेकर संतुष्ट नजर आते हैं लेकिन इनकी व्यवस्था कहां से होगी यह देखने वाली बात होगी? बवजूद इसके सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह है कि दिल्ली की जनता क्या सोचती है? डबल इंजन की सरकार या फिर अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में आप पर फिर से अपना विश्वास? इन हालातों में कांग्रेस का संघर्ष सत्ता की बजाय अपना बजूद बचाने का ही होगा। दिल्ली की सत्ता की चाबी अब जनता के हाथ में है और ये उत्तम भागीदारी सार्वतंत्रि तो क्या

जुनाव भारतीय रोजनात के लिए निर्णायक साबित हो सकते हैं।  
-अमृतलाल मारू रवि, इंदौर

इस कॉलम में आपे विचार या परिचय भेजने के लिए हमसे हैं-मेल











